

परिशिष्ट 'ख'
(नियम 17 देखिये)

सम्मिलित राज्य सेवा प्रतियोगिता परीक्षा के लिये नियम और पाठ्य-विवरण

टिप्पणी- किसी भी अभ्यर्थी को जब तक कि उसके पास आयोग से प्रवेश का प्रमाण-पत्र न हो, परीक्षा में सम्मिलित नहीं किया जायेगा।

परीक्षा में सम्मिलित होने के लिये किसी अभ्यर्थी की पात्रता या अपात्रता के सम्बन्ध में आयोग का विनिश्चय अन्तिम होगा।

नियम-(1) परीक्षा में विषय निम्नलिखित होंगे। प्रत्येक विषय के लिए उसके सामने दिये गये अंक होंगे। प्रत्येक विषय में एक प्रश्न-पत्र होगा और प्रत्येक के लिये तीन घण्टे का समय दिया जायेगा ।

अनुभाग-क- सभी अभ्यर्थियों द्वारा लिए जायेंगे, सिवाय संख्या (5) के जो केवल कोषागार अधिकारी , बिक्री कर अधिकारी और सहायक निबन्धक , सहकारी समितियाँ और पंचायत के पदों के अभ्यर्थियों के लिए है-

(1) सामान्य अंग्रेजी	5
(2) निबन्ध	10
(3) सामान्य हिन्दी	5
(4) सामान्य ज्ञान	10
(5) प्रारम्भिक गणित (केवल उन अभ्यर्थियों के लिए जो कोषागार अधिकारी,			

बिक्रीकर अधिकारी और सहायक निबन्धक, सहकारी समितियाँ

और पंचायत के पदों के लिए सम्मिलित हो रहें हों

.....

10

अनुभाग-ख नीचे दी गई सूची में से कोषागार अधिकारी , बिक्रीकर अधिकारी और सहायक निबन्धक , सहकारी समितियाँ और पंचायत के पदों के अभ्यर्थियों के लिए (सेना के वियजित अधिकारियों के लिए आरक्षित रिक्तियों के प्रतियोगिता को छोड़कर) यह आवश्यक है कि नीचे दी गई सूची से तीन और न कि तीन से अधिक विषय चुने और अन्य सेवाओं के अभ्यर्थियों के लिए यह आवश्यक है कि चार और न कि चार से अधिक वैकल्पित विषय चुने-

(6) संस्कृत साहित्य	-	-	100
(7) प्राचीन भारतीय संस्कृत	-	-	100
(8) हिन्दी साहित्य	-	-	100
(9) अरबी या फारसी	-	-	100
(10) उर्दू साहित्य	-	-	100
(11) अंग्रेजी साहित्य	-	-	100
(12) भारतीय इतिहास प्रथम	-	-	100
(13) भारतीय इतिहास द्वितीय	-	-	100
(14) यूरोपीय इतिहास	-	-	100
(15) अर्थशास्त्र	-	-	100
(16) लोक अर्थशास्त्र	-	-	100
(17) वाणिज्य	-	-	100
(18) राजनीतिक संगठन सिद्धांत	-	-	100
(19) राजनीतिक संगठन	-	-	100
(20) नीति दर्शन और तत्व मीमांसा	-	-	100
(21) भारतीय दर्शन	-	-	100
(22) मनोविज्ञान	-	-	100
(23) उच्च भौतिकी	-	-	100
(24) निम्न भौतिकी	-	-	100
(25) उच्च रसायन विज्ञान	-	-	100
(26) निम्न रसायन विज्ञान	-	-	100
(27) उच्च वनस्पति विज्ञान	-	-	100
(28) निम्न वनस्पति विज्ञान	-	-	100
(29) उच्च प्राणी विज्ञान	-	-	100
(30) निम्न प्राणी विज्ञान	-	-	100
(31) भूगोल	-	-	100

(32) कृषि प्रथम संस्था क्रम पशुपालन और दुग्धशाला उद्योग	-	-	100
(33) कृषि द्वितीय कृषि अर्थशास्त्र और कृषि रसायन	-	-	100
(34) भू-विज्ञान	-	-	100
(35) विधि प्रथम प्रश्न-पत्र	-	-	100
(36) विधि द्वितीय प्रश्न-पत्र	-	-	100
(37) विधि तृतीय प्रश्न-पत्र	-	-	100
(38) लेखा परीक्षा और लेखाशास्त्र	-	-	100
(39) शुद्ध गणित (लघु)	-	-	100
(40) शुद्ध गणित (उच्च)	-	-	100
(41) प्रयुक्त गणित (लघु)	-	-	100
(42) प्रयुक्त गणित (उच्च)	-	-	100
(43) सांख्यिकी	-	-	100
(44) प्रयुक्त यांत्रिकी	-	-	100
(45) प्रथम चालक (प्राइम मूवर्स)	-	-	100
(46) समाजशास्त्र	-	-	100
(47) सामाजिक कार्य	-	-	100
(48) रसायनिक अभियंत्रण	-	-	100
(49) राष्ट्रीय प्रतिरक्षा और सुरक्षा	-	-	100

टिप्पणी-

- (1) अभ्यर्थी को गणित के चार और सांख्यिकी के प्रश्न-पत्रों (संख्या 39 से 43) में से दो प्रश्न-पत्र से अधिक लेने की अनुमति नहीं दी जायेगी।
- (2) विषय संख्या 44 और 45 (प्रयुक्त यांत्रिकी और प्रथम चालक प्राइम मूवर्स) उत्तर प्रदेश पुलिस सेवा के लिए नहीं लिए जा सकते।
- (3) उत्तर प्रदेश कृषि सेवा वर्ग-2 के पदों के लिए अभ्यर्थियों को वैकल्पित विषयों में से कृषि के दो प्रश्न-पत्र लेना अनिवार्य है।

अनुभाग-ग

(1) व्यक्तित्व परीक्षा (मौखिक परीक्षा)

(2) प्रत्येक विषय में अभ्यर्थी को नियत किये गये अंकों में से ऐसी कटौती की जायेगी जिसे लोक सेवा आयोग यह सुनिश्चित करने के लिए आवश्यक समझे कि केवल ऊपरी ज्ञान के लिए कोई मान्यता न दी जाये।

अभ्यर्थियों को चेतावनी दी जाती है कि उन्हें अपनी उत्तर पुस्तिकाओं के आवरण पर व्यवस्थित स्थान के सिवाय अन्य कहीं अपना अनुक्रमांक नहीं लिखना चाहिये अन्यथा दण्ड स्वरूप उनके अंको में कटौती की जायेगी। इसके अतिरिक्त उन्हें कहीं पर अपने नाम नहीं लिखने चाहिये अन्यथा उन्हें अनर्ह किया जा सकता है।

(3) यदि अभ्यर्थी की लिखावट आसानी से पढ़ी न जा सके तो कुल अंको में से पर्याप्त अंक काटे जा सकते हैं, जो अन्यथा उसे प्राप्त होते।

(4) केवल ऐसे विषयों में ही नहीं जो कि अंग्रेजी या हिन्दी भाषा से विषय रूप सम्बद्ध हो, बल्कि परीक्षा के सभी विषयों में अच्छी अंग्रेजी या हिन्दी के लिए जिसमें कम से कम शब्दों का प्रयोग करने के साथ-साथ सुव्यवस्थित, प्रभावकारी और सुस्पष्ट अभिव्यक्ति भी सम्मिलित है, मान्यता दी जायेगी।

(5) सभी प्रश्न-पत्रों के उत्तर अंग्रेजी या हिन्दी देवनागरी लिपि में दिये जायेंगे, सिवाय अंग्रेजी (अनिवार्य या वैकल्पिक) विषय के प्रश्न-पत्र के, जिसका उत्तर अंग्रेजी में दिया जाना आवश्यक है और हिन्दी (अनिवार्य या वैकल्पिक) विषय के प्रश्न का उत्तर हिन्दी में दिया जाना आवश्यक है और शास्त्रीय भाषाओं की दशा में प्रश्न-पत्र में दिये गये निर्देशों का पालन किया जाना चाहिये। जिन प्रश्न-पत्रों का अंग्रेजी या देवनागरी लिपि में हिन्दी में से किसी भी एक उत्तर देने का विकल्प हो उनमें अभ्यर्थी को सम्पूर्ण प्रश्न-पत्र के लिए न कि प्रत्येक प्रश्न या उसके अलग-अलग भाग के लिए अपनी भाषा के सम्बन्ध में अपना विकल्प देना आवश्यक है। यदि वे प्रश्न-पत्र के कुछ प्रश्नों का उत्तर एक भाषा में और कुछ प्रश्नों का उत्तर दूसरी भाषा में देते हैं तो यदि प्रश्न-पत्र कुल 50 अंको का हो तो पाँच अंक काट कर और प्रश्न-पत्र 100 अंक का हो तो 10 अंक काट कर उन्हें दण्डित किया जायेगा भले ही उन्होंने वस्तुतः कितने ही अंक प्राप्त क्यों न किये हो।

(6) जब तक कि पाठ्य विवरण में अन्यथा इंगित न हो, अनिवार्य और वैकल्पिक विषयों में अभ्यर्थियों के अपेक्षित ज्ञान का स्तर ऐसा होगा जिसकी विश्वविद्यालय की स्नातक की उपाधि रखने वाले किसी युवक से आशा की जाती है।

पाठ्य विवरण
सामान्य विवरण

1. **सामान्य अंग्रेजी-** प्रश्न-पत्र में अंग्रेजी के ज्ञान और शब्दों के कुशल प्रयोग की जाँच करने के लिए प्रश्न होंगे।
2. **निबन्ध-** कई विनिर्दिष्ट विषयों में से किसी एक विषय पर अंग्रेजी या हिन्दी में लिखना होगा।
3. **सामान्य हिन्दी-** प्रश्न-पत्र सामान्य प्रकार का होगा और उसमें अंग्रेजी से हिन्दी और हिन्दी से अंग्रेजी में अनुवाद करने के लिए गद्यांश भी होंगे।
4. **सामान्य ज्ञान-** जिसमें वर्तमान घटनाओं और दिन प्रतिदिन के संप्रेक्षण और अनुभव के ऐसे विषयों का ज्ञान भी सम्मिलित है जिनकी किसी शिक्षित व्यक्ति से बिना किसी विशेष अध्ययन के आशा की जाती है।
5. **प्रारम्भिक गणित** - केवल उन अभ्यर्थियों के लिए जो कारागार अधिकारी, बिक्रीकर अधिकारी और सहायक निबन्धक, सहकारी समितियों और पंचायत के पद (पदों) के लिए परीक्षा में सम्मिलित हों। प्रश्न-पत्र में अंकगणित, बीजगणित तथा रेखागणित के प्रश्न होंगे और इसका स्तर वही होगा जो माध्यमिक शिक्षा परिषद् उत्तर प्रदेश की हाई स्कूल की परीक्षा के लिये विहित हो।

वैकल्पिक विषय

6. **संस्कृत साहित्य-** अभ्यर्थियों से प्रमुख शास्त्रीय लेखकों के विशेष संदर्भ में शास्त्रीय संस्कृत साहित्य के इतिहास का और नाटकों में प्रमुख प्राकृत का सामान्य ज्ञान प्रदर्शित करने की आशा की जायेगी। संस्कृत से अंग्रेजी में और अंग्रेजी से संस्कृत में अनुवाद करने के लिए भी गद्यांश दिये जा सकते हैं। संस्कृति में लिखने के लिए अपेक्षित उत्तर देवनागरी लिपि में लिखे जाने चाहिये।
7. **प्राचीन भारतीय संस्कृति-** अभ्यर्थियों से प्राचीन भारत की सामाजिक तथा राजनीतिक संस्थाओं और भारतीय दर्शनशास्त्र के तत्वों का ज्ञान रखने की आशा की जायेगी।
8. **हिन्दी साहित्य-** अभ्यर्थियों से हिन्दी की मानक रचनाओं की जानकारी रखने की आशा की जायेगी यद्यपि अपेक्षाकृत कम महत्व की पुस्तकों के सम्बन्ध में भी प्रश्न किये जा सकेंगे। उनसे साहित्य के इतिहास की जानकारी रखने तथा सामान्य सामाजिक इतिहास की ऐसी जानकारी रखने की आशा की जायेगी जिससे वे साहित्य को समझा सके। प्रश्नों के उत्तर देवनागरी लिपि में लिखे जाने चाहिये।
9. **अरबी या फारसी-** अभ्यर्थियों से प्रतिनिधि शास्त्रीय लेखकों के विशेष संदर्भ में इतिहास और साहित्य का सामान्य ज्ञान प्रदर्शित करने की आशा की जायेगी। सामाजिक, राजनीतिक तथा धार्मिक विकास और अभिवृद्धि के सम्बन्ध में भी प्रश्न दिये जा सकते हैं। उक्त भाषा के अंग्रेजी

में तथा अंग्रेजी से उक्त भाषा में अनुवाद करने के लिए गद्यांश दिये जा सकते हैं।

10. उर्दू साहित्य- अभ्यर्थियों से उर्दू की सबसे अधिक-पुस्तकों की जानकारी रखने की आशा की जायेगी, यद्यपि कम महत्व की कृतियों के सम्बन्ध में भी प्रश्न दिये जा सकेंगे। उनसे साहित्य के इतिहास की जानकारी रखने और सामान्य सामाजिक इतिहास की ऐसी जानकारी रखने की भी आशा की जायेगी जिससे वे साहित्य को समझ सकें। प्रश्नों के उत्तर उर्दू में लिखे जाने चाहिये।

11. अंग्रेजी साहित्य- अभ्यर्थियों से निम्नलिखित लेखकों की कृतियों के विशेष संदर्भ में स्पेन्सन के समय से लेकर 1930 तक के अंग्रेजी साहित्य के इतिहास की सामान्य जानकारी प्रदर्शित करने की आशा की जायेगी।

शेक्सपियर, मिल्टन, जानसन, डिक्से वर्डसवर्थ, कीट्स, कारलायल हैनिसन हार्डी तथा बर्नाडशा। प्रश्न-पत्र बताने में व्यापक पठन और स्वतन्त्र विचार प्रकट करने को महत्व दिया जायेगा।

12. भारत का इतिहास (प्रथम)- आर्यों के प्रथम आग्रवासन लेकर बारहवीं शताब्दी के अन्त तक भारत का प्रचीन इतिहास भारत के बाह्य बौद्धधर्म के इतिहास के सम्बन्ध में भी प्रश्न दिये जा सकते हैं।

13. भारत का इतिहास (द्वितीय) - लगभग तेरहवीं शताब्दी के आरम्भ से मध्यकालीन तथा आधुनिक भारत।

14. यूरोप का इतिहास- 1453 से 1920 तक इसमें समकालीन ब्रिटेन का इतिहास भी सम्मिलित होगा।

15. अर्थशास्त्र- अभ्यर्थियों से अर्थशास्त्र के सिद्वांत की जानकारी रखने की आशा की जायेगी और उन्हें दोनों ही, तथ्यों द्वारा सिद्वांत का दृष्टान्त देने और सिद्वांत की सहायता से तथ्यों का विश्लेषण करने के लिए तैयार रहना चाहिये। आर्थिक विचारधारा के इतिहास पर भी प्रश्न किये जा सकते हैं।

16. लोक अर्थशास्त्र- अभ्यर्थियों से आर्थिक क्षेत्र में राज्य के कार्य के केन्द्रीय और स्थानीय, प्रमुख और लोक वित्त की जानकारी रखने की आशा की जायेगी।

17. वाणिज्य- करेन्सी बैंकिंग और वित्त के सम्बन्ध में और औद्योगिक और वाणिज्यिक संगठन के सम्बन्ध में भी प्रश्न दिये जायेंगे।

18. राजनीति के सिद्वांत- अभ्यर्थियों से राजनीति के सिद्वांत और उसके इतिहास की जानकारी प्रदर्शित करने की आशा की जायेगी। राजनीति के सिद्वांत का तात्पर्य केवल विधान का सिद्वांत ही न समझा जायेगा, किन्तु राज्य का सामान्य इतिहास और न्यायशास्त्र, लोक अन्तर्राष्ट्रीय विविध और अर्थशास्त्र जैसे सादृश्य अध्ययन से उसका सम्बन्ध भी समझा जायेगा। मौलिक लेखकों के बारे में ज्ञान अपेक्षित है।

19. राजनीतिक संगठन- संविधानिक स्वरूप (प्रतिनिधि सरकार, परिसंघवाद आदि) और लोक प्रशासन, केन्द्रीय और स्थानीय अभ्यर्थियों से वर्तमान संस्थाओं का उद्भव और विकास समझने

की अपेक्षा की जायेगी । भारत के संविधान पर भी प्रश्न किये जा सकते हैं।

20. नैतिक दर्शन तथा तत्व मीमांसा- इस विषय के अन्तर्गत पूर्व तथा पश्चिमी नीतिशास्त्र का इतिहास और सिद्धान्त आते हैं, और इसमें नैतिक मानक और उनके प्रयोग, नैतिक व्यवस्था की समस्याएँ और समाज तथा, राज्य की प्रगति दण्ड के सिद्धान्त, स्थान, काल और अपघात, विकास और मान्यता ईश्वरीय स्वरूप की समस्याओं के विशेष सन्दर्भ में पश्चिमी दर्शन का इतिहास भी है।

21. भारतीय दर्शन- इस विषय के अन्तर्गत वेद, उपनिषद् और भगवद्गीता की दार्शनिक परिकल्पना बौद्ध और जैन विकास, भारतीय दर्शन के छः अंग, अर्थात्-न्याय, वैशेषिक, सांख्य, योग, पूर्व मीमांसा और वेदांत, ऐतिहासिक और अलोचनात्मक विवेचन आते हैं।

22. मनोविज्ञान- सामान्य मनोविज्ञान, अपसामान्य मनोविज्ञान, औद्योगिक मनोविज्ञान और शिक्षा मनोविज्ञान के सम्बन्ध में प्रश्न दिये जायेंगे । इसमें निम्नलिखित विषय सम्मिलित होंगे।

आधुनिक मनोविज्ञान की प्रमुख प्रवृत्तियाँ, व्यवहार की प्रक्रिया, अनुभूति और संवेद (सिद्धान्त और प्रयोगात्मक) अभिप्रेरणा, अध्ययन (रीति और विधि) स्मृति, कल्पना और चिन्तन, संवेदना और अवबोध , बोध आनुवांशिकता और पर्यावरण, वैयक्तिक व्यवस्थापन, व्यवस्थापन संघर्ष मानसिक विकार, (मनोचिकित्सा की प्रक्रिया और क्रिया विधि) व्यक्ति (गठन और विकास), असामान्यता, सिद्धान्त और माप, कार्य थकान, प्रेरणा, मनोविज्ञान, व्यक्तिगत समस्याएँ औद्योगिक सम्बन्ध, औद्योगिक वातावरण में लोकतन्त्रीय और प्राधिकारवादी नेतृत्व, विज्ञापन मनोविज्ञान, वैयक्तिक भिन्नताओं का अध्ययन, भाषा की समस्याएँ, बौद्धिक प्रेरणा और संवेगात्मक विकास, उपलब्धि का मूल्यांकन और माप, अध्ययन में सामाजिक तथा संवेगात्मक कारण, प्रशिक्षण का अन्तरण ।

23. उच्च भौतिकी- प्रश्न-पत्र एम0एस0सी0 स्तर का होगा। इसमें आधुनिक भौतिकी, पदार्थ के गुण और ध्वनि, उष्मा, प्रकाश विद्युत, तथा चुम्बकत्व और इलेक्ट्रान के सिद्धान्त के सम्बन्ध में प्रश्न होंगे।

24. निम्न भौतिकी- प्रश्न-पत्र बी0एस0सी0 स्तर का होगा। और इसमें सामान्य गुण, ध्वनि, उष्मा, प्रकाश विद्युत, तथा चुम्बकत्व के सम्बन्ध में प्रश्न होंगे।

25. उच्च रसायन विज्ञान- प्रश्न-पत्र एम0एस0सी0 स्तर का होगा। इसमें अकार्बनिक, कार्बनिक, प्रयुक्त और कृषि रसायन के सम्बन्ध में प्रश्न होंगे। अभ्यर्थियों से सिद्धान्तों के ऐतिहासिक विकास की जानकारी रखने और प्रमुख रसायनों का संक्षिप्त विवरण देने की भी आशा की जायेगी।

26. निम्न रसायन विज्ञान- प्रश्न-पत्र बी0एस0सी0 स्तर का होगा। इसमें अकार्बनिक, कार्बनिक, भौतिक रसायन के सम्बन्ध में प्रश्न होंगे।

27. उच्च वनस्पति विज्ञान- प्रश्न-पत्र एम0एस0सी0 स्तर का होगा। इसमें थैलोफाइटा, ब्रायोफाइटा तथा औरोडीफाइटा, वनस्पति क्रिया विज्ञान (प्लान्टफिजियोलोजी) और कोशिका विज्ञान

(साइटोलोजी), विकृति बीज (जिम्नोस्पर्मस) तथा आनुवांशिकी (जैनेटिक) आवृत बीज (एनजियोस्पर्मस) और परिस्थिति विज्ञान (इकोलोजी), उत्तर प्रदेश में फसलों के महत्वपूर्ण फफूद रोग जिसके अन्तर्गत जीवाणु रोग, और विषाणु रोग (बैक्टीरियल एण्ड वाइरस डिजीज) के सामान्य सिद्धान्त भी है और पौधों में उपापचयन (मेटेबोलिज्म इन प्लाण्ट्स) सम्मिलित है।

28. निम्न वनस्पति विज्ञान- प्रश्न-पत्र बी०एस०सी० स्तर का होगा। इसमें आकृति विज्ञान (मार्फोलोजी) क्रिया विज्ञान (फिजियोलोजी) और क्रिप्टोगेम्स और विकृत बीज के जीवन वृत्त, आवृत बीज, सामान्य वनस्पति क्रिया विज्ञान परिस्थिति विज्ञान, क्रय विकास, भिन्नता और अनुवांशिकता के जीवन वृत्त अर्थ वनस्पति विज्ञान के सम्बन्ध में प्रश्न सम्मिलित होंगे।

29. उच्च प्राणि विज्ञान- प्रश्न-पत्र एम०एस०सी० स्तर का होगा। इसमें अकार्डेटा (नान कार्डेटा) और कार्डेटा के प्रमुख उप-प्रभागों (सब-डिवीजनों) के समस्त निरूपकों का स्थान और काल में संरचना, विकास, जीव-परिस्थिति की (वाइनामिक्स) और वर्गीकरण और वितरण के सम्बन्ध में प्रश्न सम्मिलित होंगे । इसमें जीव विज्ञान के सामान्य सिद्धांतों के सम्बन्ध में प्रश्न सम्मिलित होंगे जिसके अन्तर्गत विकास के विभिन्न सिद्धांतों और भिन्नता, आनुवांशिकता और अनुकूलन, नर-मादा कोशिकीय तथ्य (सेक्ससेल्यूलर फिनामिन्स) आदि विषय आते हैं।

30. निम्न प्राणि विज्ञान- प्रश्न-पत्र बी०एस०सी० स्तर का होगा। इसमें अकार्डेटा कोशिका और ऊतक, जनन और भौतिकी (रिप्रोडक्शन एण्ड हिस्टोलाजी)के विषय, विकास सामान्य सिद्धांत कार्डेटा, प्रारम्भिक कारक और भ्रूण विज्ञान क्रिया विज्ञान, भ्रू-विज्ञानीय और भौगोलिक वितरण आते हैं।

31. भूगोल- भारत के विशेष संदर्भ में विश्व का भूगोल । ऐसे विषयों पर प्रश्न दिये जा सकते हैं। जिनका सम्बन्ध अर्थशास्त्र, इतिहास, भौतिकी, वनस्पति विज्ञान और भू-विज्ञान जैसे अन्य विषयों के साथ संयुक्त रूप से भूगोल से हो ।

32. कृषि (प्रथम)- फसल वद्धवन (क्राप हसबेन्डरी), पशुपालन और दुग्धशाला उद्योग, फसल वद्धवन के सामान्य सिद्धान्त, उत्तर प्रदेश के विशेष संदर्भ में भारत की प्रमुख क्षेत्रीय फसलों (फोन्ड, क्राप) का उत्पादन, फसलों के चक्रानुक्रम का सिद्धांत, खाद कितने परिमाण में डाली जाये, खाद डालने का समय और उसकी विधि, खादों का मिश्रण, उत्तर प्रदेश के सामान्य खत-पतवार और उनका नियन्त्रण कृषि क्षेत्र के प्रबन्ध के सिद्धान्त । कृषि-कर्म की विभिन्न प्रणालियों के लक्षण और उनकी आवश्यकता । कृषि श्रमिक और उनका संगठन । कृषि क्षेत्र, पशुधन और उनका प्रबन्ध । भूमि की उर्वरता पर प्रभाव डालने वाले कारक: दूध और दुग्ध उत्पादन उत्पादित दूध की किस्म और उसके परिणाम पर प्रभाव डालने वाले कारक । विपणन (मार्केटिंग) मानकीकरण, पास्चुरीकरण तथा समस्थितीकरण (होमोजेनाइजेशन) के लिए दूध का शोध: मलाई (क्रीम), मक्खन, घी, और दही तैयार करना तथा उन्हें बनाना:

पशुओं का पोषण, राशन नियत करने के सिद्धांत, खाद्य के मानक, श्रम और दूध के लिए खाद्य

की आवश्यकताएँ ।

33. कृषि (द्वितीय)- कृषि अर्थशास्त्र और कृषि रसायन विज्ञान, मिट्टी के निर्माण और वर्गीकरण के सिद्धान्त, मिट्टी के रसायनिक भौतिक और भौतिक रसायनिक गुण । भूमि का कटाव, उसका कारण और उसे रोकने के उपाय । लोना तथा रेह मिट्टी का सुधार (एमिलियोरेशन) मिट्टी में नाइट्रीकर और नाट्रोजन विनिलेशन। मिट्टी के सूक्ष्मजीवी प्रदूषण । जैव पदार्थ का विघटन और मिट्टी में हार्म्य कस संश्लेषण। पौधों में कार्बोहाइड्रेट वसा (फैट्स) और प्रोटीन का संश्लेषण । एन्जाइम और विटामिन सम्बन्धी प्रारम्भिक प्रत्यय और उनका सम्बन्ध । हारमोन्स और उपज का विनियमन करने वाले अन्य तत्वों का कार्य। साधारण और मिश्रित उर्वरकों और खादों का मूल्यांकन जिसके अन्तर्गत कृषि क्षेत्र की खाद और कम्पोस्ट के रसायनिक गुण भी है। जुगाली करने वाले पशुओं और अन्य पालतू पशुओं के पाचन। पशुओं के शरीर में कार्बोहाइड्रेट, वसा, प्रोटीन और खनिज पदार्थ का उपापचयन । पाचन परीक्षण, स्टार्च तुल्यांक एल्युमिनीय अनुपात, भरण-पोषण वृद्धि जनन, दुग्ध श्रवण और कार्य उत्पादन के पोषण तत्वों की आवश्यकता । दुग्ध संघटकों, जैसे वसा, कार्बोहाइड्रेट और प्रोटीन के रसायनिक गुण और महत्व । दही जमाने के दौरान दूध में होने वाले रसायनिक परिवर्तन। दूध और घी में मिलावट और उसका पता लगाना।

कृषि अर्थशास्त्र- कृषि अर्थशास्त्र का अर्थ, क्षेत्र और विषय-वस्तु, कृषि उत्पादन कार्यक्रम में कृषि अर्थशास्त्र का महत्व ।

उत्पादन के कारणों का वर्गीकरण भारत में भूमि, उसका उपयोग और भू-संरक्षण । भूमि उपयोग के सीमान्त सिद्धान्त। विशेषज्ञता और अनेकता के सिद्धान्त । सघन और विस्तृत खेती । कृषि क्षेत्र की भूमि और उसकी उपज का मूल्यांकन । कृषि उत्पादन के मूल्य (प्रतिफल नियम) कृषि क्षेत्र के कारबार का आकार। कृषि में निवेश और उत्पादन का सम्बन्ध । उत्तर प्रदेश के विशेष संदर्भ में भारत में भूमि सुधार।

खेतिहर मजदूर, लगान, स्वत्व और कृषि लाभ।

कृषि उधार, उधार देने वाली संस्थायें, भूमि बन्धक बैंक। ग्रामीण उधार की एकीकृत योजना। कृषि वित्त व्यवस्था में भारतीय रिजर्व बैंक का योगदान ।

कृषि उपज का विपणन अवसर, व्यवस्था और अभिकरण, वितरण में गुंजाइश। सहकारी विपणन कराधान और कृषक, कृषि क्षेत्र के कर का भार । कृषि जोत का कराधान। कृषि उपज पर उत्पादन शुल्क । कृषि सम्बन्धी राज्य सहायता ।

कृषि सहकारिता, भारत में सहकारी समितियों के विभिन्न स्वरूप । भारत की कृषि क्षेत्र अर्थ व्यवस्था में कृषि सहकारिता का योगदान है। दुर्भिक्ष सहायता कार्य । जनसंख्या और खाद्य सम्भरण, अल्पविकसित देशों में कृषि आयोजना ।

34. भू-विज्ञान- गतिशील तथा संचरचनात्मक भू-विज्ञान । जीवशय विज्ञान (प्लेनियोनथ्योलाजी) ऐतिहासिक भू-विज्ञान (जिसमें भारतीय भू-विज्ञान भी है), स्काट विज्ञान (क्रिस्टेलोग्राफी) (खनिज

विज्ञान शैल-विज्ञान, पेट्रोलोजी) और आर्थिक भू-विज्ञान।

35. विधि प्रथम- न्याय शास्त्र, संविधान विधि, अपकृत्य विधि साक्ष्य विधि ।

36. विधि द्वितीय- संविदा विधि के सामान्य सिद्धान्त, परित्राण विधि, प्रत्याभूति, उपनिधान, गिरवी और अभिकरण, माल की बिक्री, भागीदारी विधि और पराक्राम्य लिखित और बैंकिंग ।

37. विधि तृतीय- अन्तर्राष्ट्रीय विधि ।

38. लेखा परीक्षा और लेखा कर्म- (1) लेखा परीक्षा लेख परीक्षा के सिद्धान्त, और प्रक्रिया उनका सभी प्रकार के व्यवसायनिक वाणिज्यक, औद्योगिक, बैंकिंग, बीमा लोकोपयोगी और विनियोजन उपक्रम (इन्वेस्टमेन्ट अन्डरटेकिंग्स) में व्यवहारिक प्रयोग। लेखा-परीक्षणों के अधिकार और कर्तव्य। वास्तविक और संदिग्ध जाल-साजी की आन्तरिक लेखा-परीक्षा और अनुसंधान । लेखा-परीक्षा को की रिपोर्ट, प्रमाण-पत्र और राय । लेखा परीक्षा की परिसीमार्यें।

(2) लेखा-कर्म प्रश्न-पत्र में लेखे की महाजनी पद्धति, भागीदारी लेखा की विशेष समस्यायें, कम्पनी लेखा जिसके अन्तर्गत समामेलन, सविलियन और पुनर्गठन भी है, दोहरी लेखा पद्धति, बैंक लेखा, स्वामित्व लेखा, भाड़ा क्रय करार और किस्त प्रणाली, वैभागिक और शाखा लेखा, अवक्षयण, रहित और निक्षेप निधि (अग्रिम) के प्रश्न सम्मिलित होंगे।

39. शुद्ध गणित (निम्न)- प्रश्न-पत्र बी0 एस0सी0 स्तर का होगा। प्रश्न-पत्र में निम्नलिखित विषय होंगे-

(1) बीजगणित, त्रिकोणमिति और सारणिक के साथ समीकरण सिद्धान्त

(2) शुद्ध समतल रेखागणित तथा द्वि-विमितीय और त्रिविमितीय वैश्लेषिक रेखागणित ।

(3) अवकलन गणित और समाकलन और अवकलन समीकरण ।

40. शुद्ध गणित (उच्च)- प्रश्न-पत्र एम0 एस0सी0 स्तर का होगा। प्रश्न-पत्र में निम्नलिखित विषय होंगे-

(1) अनन्त श्रेणी और गुणनफल।

(2) विश्लेषण

(क) वास्तविक सम्मिश्रचर के फलन

(ख) सम्मिश्रचर के फलन

(3) अवकलन रेखागणि सहित उच्च रेखागणित, स्थान आवरण में वक्रता, पृष्ठ वक्रता, वक्रता रेखा, अल्पतरी ।

41. प्रयुक्त गणित (निम्न)- प्रश्न-पत्र बी0 एस0सी0 स्तर का होगा। प्रश्न-पत्र में निम्नलिखित विषय होंगे-

(1) स्थैतिक, जिसमें आकर्षण और विभव के सिद्धान्त और द्रवस्थिति विज्ञान भी सम्मिलित हैं।

(2) कण गति विज्ञान और प्रारम्भिक दृढ़ गति विज्ञान

42. प्रयुक्त गणित (उच्च)- प्रश्न-पत्र एम0 एस0सी0 स्तर का होगा। प्रश्न-पत्र में निम्नलिखित

विषय होंगे-

- (1) स्थैतिक, जिसके अन्तर्गत आकर्षण और विभव भी है।
- (2) द्रव स्थिति विज्ञान, तरल दबाव, वायुमण्डलीय दबाव, कोशिका।
- (3) कण तथा दृढ़ पिंडों का गति विज्ञान । कण गति विज्ञान, केन्द्रीय कक्ष, निवरूद्ध गति, अवरोधक माध्यम में गति, चिविमितीय में गति ।
दृढ़ गति विज्ञान-द्विविमितीय में गति। संवेग (मोमेन्टम) और गति ऊर्जा । लैगरेग का गति समीकरण और छोटे दोलनों (ओसीलेशन्स में उनका प्रयोग)।
- (4) द्रव गति विज्ञान, जिसमें किसी द्रव के माध्यम से ठोस पदार्थ की गति का प्रारम्भिक सिद्धान्त और पृष्ठीय तरंग भी है।
- (5) विद्युत और चुम्बकत्व
- (6) ऊष्मा गतिकी, गैसों का गतिज सिद्धान्त, विकिरण।

43. सांख्यिकी- (1) बारम्बारता बंटन (फ्रीक्वेंसी डिस्ट्रीब्यूशन) औसत प्रतिशतक (परसेन्टाइल) और प्रसार (डिसपरशन) नापने के साधारण रीति लेखाचित्रीय रीतियाँ, गुणात्मक आंकड़ों का व्यवहार अर्थात् अनुपात की तुलना द्वारा साहचर्य एसोसियेशन का अनुसंधान, अन्तर्वेशन (अटरपोलेशन), की लेखाचित्रीय और बीजगणित रीतियों, की कार्यप्रणाली ।

(2) मूल्य मजदूरी और आय, व्यवसाय परिवहन, उत्पादन और उपभोग, शिक्षा आदि के आंकड़ों के विश्लेषण और निर्वाचन में प्रयुक्त व्यवहारिक रीतियाँ, जनसंख्या और जन्म-मृत्यु के आंकड़ों पर विचार करने की रीति, प्रयोग या सम्प्रेक्षण के आंकड़ों को व्यवहार में लाने में प्रयुक्त प्रकीर्ण (रीतियाँ) ।

सांख्यिकी के आधुनिक गणितीय सिद्धान्त के तत्व, बारम्बारता, वक्रता और सामान्यतया समूहों के गणितीय निरूपण (रिप्रेजेन्टेशन) औसत, प्रतिशत मानक और विचलन को प्रभावित करने वाले प्रतिदर्शियों (सेम्पलिंग) की शुद्धता, समूह आदि के औसतों के बीच प्रेक्षित अन्तर का महत्व, दो परिवर्तियों (बेरियेबिल्स) के लिये सहसम्बन्ध का सिद्धान्त ।

44. प्रयुक्त यांत्रिकी-(क) भवन-छत कैंची (रूफ ट्रस्यसेज) के निर्माण में प्रयुक्त की जाने वाली सामग्री पर विचार । इस्पात और इमारती लकड़ी । विभिन्न रीतियों से कैंची के प्रतिबल (स्ट्रेस) का अवधारण । अचल भार (डेड लोड्स) और वायु दबाव, सुरक्षा से उपादान (फैक्टर्स) और सक्रिय प्रतिबल (वर्किंग स्ट्रेस) ।

छत कैंची की डिजाइन। छत कैंचियों और छत आवरणों (रक्त कवरिंग्स) के विभिन्न प्रकार गलपट्ट (कालर बोम) और हैमर बोम कैंचियाँ ।

थाम (स्ट्रट) की डिजाइन में यूलर, गार्डन, रैंकिन, फिडरल, जानसन के सूत्र का और सीधी लाइन के सूत्र (फारमूला) का उपयोग । थाम में बहकाव (बकलिंग), विभिन्न सूत्रों से प्राप्त थाम की तुलनात्मक सामाथ्य (स्टैग्थ) को बताने वाले वक्र खण्डों के आकार चुनाव । इस्पात के कार्य वाले

जोड़ों की फिनिश, सिरा वैंयरिंग की डिजाइन, सिरों को जोड़ने और उनके अवलम्बन की रीति ।
थाम वृत और दीर्घवृत (इलिप्स) का प्रयोग और संरचना की डिजाइन में क्लेप्राण का प्रमेय
(ब्योरम) ।

ढले हुये लोहे और इस्पात के खम्भे- इस्पात के खम्भों में कोरदार (फलेन्ज) और पेट्र के जोड़
(वेप कनेक्शन) सिरे (केप्स), आधार (वैसेज), खम्भो की जाड़ी तान लगाना (ट्रांसवर्स ट्रसिंग आ
आफ काल्स)।

नींव (फाउन्डेशन) सुरक्षित दाव, खम्भों की नींव, पटिया की नींव बाहुधरन (कैन्टीलीवर) नींव
झंझरीदार (ग्रीलेज) नींव।

दीवाला लट्ठा (पाइल्स)

पुश्ता (रिटैनिंग वाल्स) और मिट्टी का दबाव- रेकिन का सिद्धान्त, बैज का सिद्धान्त, बिकर और
ब्लार्ड की लेखा चित्रीय रचना (ग्राफिक कन्सट्रक्शन्स) शुद्धियों सहित पक्की चिनाई (मेसोनरी) में
विभिन्न प्रकार की पुश्ता दीवारों की डिजाइन।

पक्की चिनाई की और इस्पात की ऊची चिमनियाँ- सिद्वांत और डिजाइन

इस्पात और पक्की चिनाई के जलाशयों की डिजाइन- वायु के दबाव का विचार रखते हुये।

अतिरिक्तंगी ढाचों (रिडनडेन्ट फ्रेम्स) में ढांचेदार संरचना (फ्रेम्स स्ट्रक्चर्स) विस्थापन (डिफ्लैशन)
और तिबलों का अवधारण ।

नमनपूर्ण (बैंडिंग मोमेन्ट) के लिए प्रभाग आरेख (इनफ्लयेन्स डाइग्राम्स) और धारणों से निर्मित
कैचियों के सामान्य रूप से विभाजित और अनियमित भारों के लिए कर्तन (शियार) और तीन
कील वाल परवलयिक (थिरी पिन्ड पैरावोलिक), अर्ध अड़ाकर और अर्ध गोलाकार डाट । (गुम्बज
डिजाइन के सामान्य सिद्वांत) भवन की डिजाइन के सिद्धान्त के भवनों पर भार का विचार,
भवनों के लिए इस्पात के काम से गर्डर , आदि।

(ख) पुल- ऊपरी ढांचे (सुपरस्ट्रक्चर) की डिजाइन । गतिमान भार के कारण नमन भार का
लेखाचित्रीय और वैश्लेषिक विधि द्वारा अवधारण वायु दाब।

पक्की चिनाई के पुलों और पुलियों की डिजाइन।

प्लेट-वेव गर्डर । प्रतिबल का विश्लेषण । वारेन तथा जालदार गर्डर।

तीन कोल वाले डाट- दोहरी कोल वाले और दृढ़ डाट।

भूला (सस्पेन्शन) बाहुधारण तथा नालिका (कन्टीलीवन और टेबुलर) पुल की डिजाइन का
सामान्य विचार।

इस्पात की डाट वाले पुल ।

दोलयमान (स्विम) पुल।

(ग) प्रचलित कंक्रीट- कर्तन, नमन और प्रकीर्ण (डायगनल), तनाव उसकी प्रकृति, विकास और
प्रबलन का स्थान । साधारण और दोहरी प्रचलित धरन और अनेकाधार (कन्टिन्यूअस) धन की

डिजाइन।

प्रचलित कंक्रीट के खम्भों और लट्ठों का सिद्धान्त और उनकी डिजाइन। पटिया की नींव की डिजाइन।

साधारण बाहुधरन और दोहरा पुश्ते की डिजाइन। प्रचलित कंक्रीट खण्डों के लिए इन्टरसिया के समतुल्य पूर्ण / लचीलावस्थापन का सिद्धान्त और प्रचलित कंक्रीट डाटा में प्रतिबल के अनुसंधार के रूप-रेखा।

(घ) सामान्य- प्रतिबल का विश्लेषण विकृति (स्ट्रेन) का विश्लेषण, इलास्टिक सीमा और चरम शाक्ति। इलास्टिक स्थिरों के बीच सम्बन्ध: किसी संरचना अवयव के कार्यकारी प्रतिबल के लिए लान हार्ड बेरोच का सूत्र और उसकी आड़ी काट वाले क्षेत्र का अवधारण। प्रतिबल की आवृत्ति। अचल भार के नमन पूर्ण और करतन बल के रेखाचित्र / ढाचों में प्रतिबल का लेखाचित्रीय अवधारण। वायु के दबाव का प्रभाव, काट विधि, नमन के कारण धरन की आड़ी काट में प्रतिबल (एम0आई0एफ0 / वाई-इ0आर0)। संयुग्मां प्रतिबल का यौगिक। भू-दबाव के सम्बन्ध में रैंकिंग का सिद्धान्त नीव की गहराई और फटिंग का सामर्थ्य। ग्लेजनीव, भू-दबाव के सम्बन्ध में कैला का सिद्धान्त रे भान के कारण परिवर्तन।

चल भार (लिव लोड) के लिए नमन घूर्ण और बर्तन बव आरेख। एक सामान और भिन्न समानता के प्रतिबल का विश्लेषण। धरनी के नमन का इलास्टिक सिद्धान्त, धरनी में नमन और करतन प्रतिबल। खण्डों और समकक्ष क्षेत्रों का मापांक / उत्केन्द्र भार स्थित (एक्सोनट्रक लोड) के कारण जोड़ में अधिकतम तथा न्यूनतम प्रतिबल। बाँध (डेम) और चिमनियों में प्रतिबल। खण्ड निर्माण संरचना का स्थायित्व। रिवेटदार जोड़ों की डिजाइन और वाइलर खोलों (सेल्स) में प्रतिबल कैचियों के सम्बन्ध में फयूलर का सिद्धान्त, रैंकिन, गार्डन, तथा अन्य लोगों के कारण परिवर्तन। ऐठन (टार्सरन) सम्मिलित ऐठने और नमन विस्थापन आबद्ध (एनकास्टर) धरन अनकाधर धरन और त्रिपरिवल (थोरोमामेन्ट्स) का प्रमेय। डार्टा की इलास्टिक का सिद्धान्त, पक्की चिनाई के डाटा।

45. प्रथम चालक प्राइम मूसर्स ईंधन गैस संयन्त्र और बाइलर-

(क) ईंधन, कोयला, लकड़ी, पेट्रोलियम, गैस, पेट्रोल, अल्कोहल आदि। भौतिक लक्षण सन्निकट रसायनिक रचना, दहन का ताप।

(ख) गैस संयन्त्र गैस उत्पादक, दबाव तथा चूषण संयन्त्र (सक्सन प्लाण्ट), विन्यास और कार्यकरण।

(ग) बाइलर-प्रवात (ड्राट) प्राकृतिक, प्रपोदित और प्रेरित। निश्चल लाकोमोटिव के साधारण रूप, समुद्री जल-नलिका (मैरीन वाटरट्यूब) और भट्ठी जाली क्षेत्र (फायर ग्रेट एरिया) के पृष्ठ को गरम करने वाले अन्य प्रकार, वाइलर दक्षता अति तापक (सुपर हीटर) भरण जल तापक (फीड वाटर हीटर) उप साधन और निन्यास।

उष्मा इन्जन का सिद्धान्त-

(क) ऊष्मागतिकीय सिद्धान्त (थर्मोडाइनेमिकल प्रिंसिपल्स) करनाट का चक्रपूर्ण ताप इन्जन, द्वितीय नियम।

(ख) वायु इन्जन-स्टर्लिंग और अन्य प्रकार।

(ग) अतिरिक्त दहन इन्जन-गैस, तेल और पेट्रोल इन्जन चक्रों के प्रकार और उनके कार्य के लक्षण, मिश्रण दक्षता का समानुपात ।

(घ) वाष्प-के उत्पादन के ऊष्मागतिकी, वाष्प का प्रसार और संघनन। ऊष्मा आरेख आदि।

(ङ) आधुनिक विकास के विशेष सन्दर्भ में वाष्प इन्जन और टरबाइन।

(च) प्रशीतन संयन्त्र (रेफ्रीजरेशन प्लान्ट्स)- सिद्धान्त और अधिक प्रचलित प्रकार के प्रशीतन संयन्त्रों का सामान्य विन्यास ।

(छ) वायु संपीडक (एअर कम्प्रेसर्स)- वायुवीय कार्यकारक (न्यूमेटिक वर्किंग) का सिद्धान्त, जनन संयंत्र, उपसाधन के ब्यौरे।

(क) अधिक महत्वपूर्ण प्रकार के संयंत्रों का सामान्य विन्यास और निर्माण।

(ख) काबरेटर और इग्नीशन की पद्धति।

(ग) सिलिंडर, पिस्टर, क्रासहेड, गाइड, संयोजन छड़े, क्रैकर्स, गवर्नर्स, गतिपाल पहिया (फलाईवील) वाल्व और वाल्व गियर, ग्लैण्ड और पाइप ।

(घ) इंजन की जॉच- भाप और ईंधन गैस की खपत और डाइनमोमीटर, सूचक (इन्डिकेटर्स) और सूचांक आरेख ।

46. समाजशास्त्र- समाजशास्त्र के सिद्धान्त (सामाजिक पद्धति,) भारतीय सामाजिक पद्धति , समाजशास्त्र के सिद्धान्त (सामाजिक नियंत्रण और सामाजिक परिवर्तन), प्रयुक्त समाजशास्त्र।

47. सामाजिक कार्य- माननीय सम्बन्धों की नींव सामाजिक कार्य के सिद्धान्त और उसका व्यवहार सामुदायिक विकास और कल्याण सामाजिक व्यवस्था।

48. रासायनिक इन्जीनियरिंग- प्रश्न-पत्र बी0एस0-सी0 (रासायनिक इन्जीनियरिंग) स्तर का होगा और इसमें निम्न लिखित विषयों पर प्रश्न-पत्र होंगे-

(क). प्रमुख रासायनिक उद्योग, इकाई प्रक्रिया, भौतिक और ऊर्जा संतुलन।

(ख). रासायनिक इन्जीनियरिंग, तापगति विज्ञान और गति विज्ञान।

(ग). अधिक सामान्य इकाई प्रक्रिया- जैसे द्रव प्रवाह: ताप अन्तरण, आसवन, अवशोषण ।

(घ) अधिक सामान्य इकाई प्रक्रिया- जैसे द्रव प्रवाह: ताप अन्तरण, आसवन, अवशोषण निष्कर्षण, शुष्कन और आद्रीकरण इत्यादि।

49. राष्ट्रीय प्रतिरक्षा और सुरक्षा- प्रश्न-पत्र सामान्य रूप से बड़ी शक्तियों और विस्तार से भारत की प्रतिरक्षा और सुरक्षा समस्याओं के सम्बन्ध में होगा।

1- राष्ट्रीय प्रतिरक्षा के तत्व-

- (क). भौगोलिक तत्व, सीमान्त भू-भाग,
- (ख). आर्थिक तत्व, स्रोत, भारतीय और वैज्ञानिक विकास, परिवहन और संचार साधन,
- (ग). आंतरिक राजनीतिक स्थिति,
- (घ). आधुनिक राज्य की प्रतिरक्षा तंत्र,

2-आधुनिक प्रतिरक्षा और सुरक्षा-

- (क). प्रतिरक्षा और सैनिक संधि
- (ख). तटस्थता और गुट निरपेक्षता,
- (ग). निरस्तीकरण और विश्व शांति संगठन

3-भारत की प्रतिरक्षा और सुरक्षा-

- (क). ऐतिहासिक पृष्ठभूमि और समस्यायें
- (ख). स्वतंत्र भारत की प्रतिरक्षा समस्यायें,
 - (1). अन्तर्राष्ट्रीय शक्ति की राजनैतिक के संदर्भ में भारत की विशेष नीति और पड़ोसी देश से उसके सम्बन्ध
 - (2). भारत के सामरिक महत्व के स्थल और सीमा क्षेत्र
 - (3). भारत की आर्थिक शक्ति
 - (4). भारत की प्रतिरक्षा संगठन

50. व्यक्तित्व परीक्षण (मौखिक परीक्षा)- परीक्षा बौद्धिक रुचि के विषयों के विषयों में न होकर सामान्य रुचि के और विशिष्ट रूप से निर्धारित विषयों में होगी। प्रत्येक अभ्यर्थी को बुद्धि, व्यक्तित्व, चरित्र, स्वास्थ्य और सेवा में सामान्य उत्सुकता के लिए अंक दिये जायेंगे।
मौखिक परीक्षा में अंक देते समय सेना के वियोजित अधिकारियों के लिए आरक्षित रिक्तियों में अभ्यर्थी की सैन्य सेवा के अभिलेख पर विचार किया जायेगा।